हफ़्तावार रिसाला : 391
Weekly Booklet : 391

तक़रीबन 36 साल पहले का बयान

Be Namaazi Ki Sazayen (Hindi)

बे नमाज़ी की सज़ाएं

(सफ़हात : 19)

बे नमाज़ी की दुन्या मे 5 सज़ाएं 6
जहन्नम इन्तिहाई सियाह है 13
अल्लाह पाक की रह़मत से मायूस न हों 14
वुज़ू करते हुए मुस्कुराने लगे 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"बे नमाज़ी की सज़ाएं"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

बे नमाज़ी की सज़ाएं

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : **"बे नमाज़ी की सज़ाएं"** पढ़ या सुन ले उसे पक्का नमाज़ी बना और उस की मां बाप समेत बे हिसाब बख़्शिश फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : बेशक दुआ ज़मीनो आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो । (ترمذی، 2/28، حدیث:486)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मैं ने ऐसा क्यूं किया ?

ह़ज़रते अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने पूछा : आप ने ऐसा क्यूं किया ? फ़रमाया : एक मरतबा मैं रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया और

इस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ कर हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए, फिर फ़रमाया : ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने येह अ़मल क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ किया : आप ने ऐसा क्यूं किया ? इर्शाद फ़रमाया : बेशक जब मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ येह पत्ते झड़ जाते हैं। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ۚ﴿۱۱۴﴾

(پ12، ہود:114)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

(مسند امام احمد، 9/178، حدیث:23768)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! नमाज़ एक अ़ज़ीम ने'मत है, जो पाबन्दी से पढ़ेगा वोह जन्नत का ह़क़दार होगा और जो नहीं पढ़ेगा वोह अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार बनेगा। हर मुसल्मान आ़क़िलो बालिग़ मर्दो औ़रत पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। इस की फ़र्ज़िय्यत (या'नी फ़र्ज़ होने) का इन्कार कुफ़्र है और जो जान बूझ कर एक नमाज़ छोड़े वोह फ़ासिक़, सख़्त गुनाहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। नमाज़ एक ताकीदी फ़रीज़ा है कि **अल्लाह** पाक ने क़ुरआने पाक में नमाज़ क़ाइम करने की ताकीद फ़रमाई है। क़ुरआने पाक और अह़ादीसे मुबारका में बे नमाज़ी के लिये बहुत सी सज़ाएं बयान फ़रमाई गई हैं जिन में से चन्द सज़ाएं पढ़िये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये :

बे नमाज़ियों के लिये जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी

पारह 16 **सूरए मरयम** की आयत नम्बर 59 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

فَخَلَفَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए तो अ़न्क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे।

होलनाक कूंवां

बयान की हुई आयते मुक़द्दसा में "ग़य्य" का तज़्किरा है, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "ग़य्य" जहन्नम में एक वादी है जिस की गरमी और गहराई सब से ज़ियादा है, इस में एक कूंवां है जिस का नाम "हबहब" है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है, **अल्लाह** पाक उस कूंएं को खोल देता है जिस से वोह ब दस्तूर (या'नी पहले की त़रह़) भड़क्ने लगती है, **अल्लाह** पाक फ़रमाता : ﴿كُلَّمَا خَبَتۡ زِدۡنٰهُمۡ سَعِيۡرًا ﴿۹۷﴾﴾ (پ15، بنی اسرائیل:97) "जब बुझने पर आएगी हम उन्हें और भड़क ज़ियादा करेंगे।" येह कूंवां बे नमाज़ों और ज़ानियों और शराबियों और सूदख़ोरों और मां बाप को ईज़ा देने वालों के लिये है।

(बहारे शरीअ़त, 1/434, हिस्सा : 3, ब तग़य्युरे क़लील)

दुन्यवी कूंवां

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़ उठो ! और घबरा कर जल्द अपने गुनाहों से तौबा कर लो ! बयान की हुई रिवायत में

बे नमाज़ियों, शराबियों, ज़ानियों, सूदख़ोरों और वालिदैन को ईज़ा देने वालों के लिये दर्से इ़ब्रत है, उस ख़ौफ़नाक कूंएं को समझने के लिये कभी किसी दुन्यवी गहरे कूंएं के किनारे खड़े हो कर उस की गहराई में ज़रा नज़र डालिये और सोचिये कि अगर दुन्या के इस कूंएं ही में क़ैद कर दिया जाए तो क्या इस सज़ा को बरदाश्त कर सकेंगे ? अगर नहीं और यक़ीनन नहीं तो फिर जहन्नम के ख़ौफ़नाक कूंएं का अ़ज़ाब क्यूंकर बरदाश्त हो सकेगा !

(फ़ैज़ाने नमाज़, स. 422)

बिग़ैर गोश्त के चेहरे

"क़ुर्रतुल उ़यून" में नक़्ल कर्दा एक ह़दीसे पाक में येह मज़्मून है कि उम्मते मुस्त़फ़ा के 10 अफ़राद ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** पाक ग़ज़बनाक होगा, उन के चेहरे बिग़ैर गोश्त के हड्डियों का ढांचा होंगे और उन्हें जहन्नम की त़रफ़ ले जाने का हुक्म सादिर फ़रमाएगा, वोह 10 अफ़राद येह है : ﴾1﴿ बूढ़ा ज़ानी ﴾2﴿ गुमराह पेश्वा ﴾3﴿ शराब का आ़दी ﴾4﴿ मां बाप का ना फ़रमान ﴾5﴿ चुग़ल ख़ोर ﴾6﴿ झूटी गवाही देने वाला ﴾7﴿ ज़कात न देने वाला ﴾8﴿ सूदख़ोर ﴾9﴿ ज़ालिम और ﴾10﴿ बे नमाज़ी । मगर बे नमाज़ी के लिये दुगना (या'नी डबल) अ़ज़ाब होगा और बे नमाज़ी बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में उठेगा कि उस के दोनों हाथ उस की गरदन से बंधे होंगे और फ़िरिश्ते उस की पिटाई कर रहे होंगे, जन्नत उस से कहेगी : "न तू मुझ से है और न मैं तुझ से ।" और जहन्नम कहेगा : मैं तुझ से हूं और तू मुझ से, **अल्लाह** पाक की क़सम ! यक़ीनन मैं तुझे शदीद तरीन अ़ज़ाब दूंगा । उस वक़्त उस (बे नमाज़ी) के लिये दोज़ख़ का दरवाज़ा खुल जाएगा और वोह तेज़ रफ़्तार तीर की मानिन्द उस के

दरवाज़े में दाख़िल होगा, और उस के सर पर हथोड़े मारे जाएंगे और जहन्नम के उस त़ब्क़े में होगा जिस में फ़िरऔ़न, हामान और क़ारून होंगे।

(قرۃ العیون، ص384 ملخصًا, नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं, स 18, 19 मुलख़्ख़सन)

बे नमाज़ी के लिये न नूर होगा और न दलील और नजात

मेरे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करे उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर व दलील और नजात होगी और जो इस की ह़िफ़ाज़त न करे उस के लिये बरोज़े क़ियामत न नूर होगा और न दलील होगी और न नजात। और वोह शख़्स क़ियामत के दिन क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा। (مسند امام احمد، 2/574، حدیث:6587)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ह़दीसे पाक के येह अल्फ़ाज़ : जिस ने नमाज़ की ह़िफ़ाज़त की) इस त़रह़ कि नमाज़ हमेशा पढ़े, सह़ीह़ पढ़े, दिल लगा कर इख़्लास के साथ अदा किया करे, येही मा'ना हैं नमाज़ क़ाइम करने के जिस का हुक्म क़ुरआने करीम ने बारहा दिया : ﴿اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ﴾ (پ1، البقرۃ:43) (या'नी नमाज़ क़ाइम रखो) और ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "नमाज़ बरोज़े क़ियामत नूर व दलील व नजात होगी" के बारे में फ़रमाते हैं : क़ियामत में क़ब्र भी दाख़िल है क्यूं कि मौत भी क़ियामत ही है। मत़लब येह है कि नमाज़ क़ब्र में और पुल सिरात़ पर रोशनी होगी कि सज्दा गाह तेज़ बेटरी की त़रह़ चमकेगी और नमाज़ उस के मोमिन बल्कि आ़रिफ़ बिल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाला) होने की दलील होगी नीज़ इस नमाज़ के ज़रीए़ से उसे हर जगह नजात मिलेगी (या'नी छुटकारा मिलेगा) क्यूं कि क़ियामत में पहला

सुवाल नमाज़ का होगा, अगर इस में बन्दा काम्याब हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه आगे भी काम्याब होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/367, 368)

बे नमाज़ी की 15 सज़ाएं

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लिशान है : "जो नमाज़ की पाबन्दी करेगा, **अल्लाह** पाक पांच बातों के साथ उस का इक्राम (या'नी इ़ज़्ज़त) फ़रमाएगा : ﴿1﴾ उस से तंगी और ﴿2﴾ क़ब्र का अ़ज़ाब दूर फ़रमाएगा ﴿3﴾ **अल्लाह** पाक नामए आ'माल उस के सीधे हाथ में देगा ﴿4﴾ वोह पुल सि़रात़ से बिजली की सी तेज़ी से गुज़र जाएगा और ﴿5﴾ जन्नदत में बिग़ैर ह़िसाब दाख़िल होगा और जो सुस्ती की वज्ह से नमाज़ छोड़ेगा, **अल्लाह** पाक उसे "15 सज़ाएं" देगा : पांच दुन्या में, तीन मौत के वक़्त, तीन क़ब्र में और तीन क़ब्र से निकलते वक़्त।

दुन्या में मिलने वाली पांच सज़ाएं

﴿1﴾ उस की उ़म्र से बरकत ख़त्म कर दी जाएगी ﴿2﴾ उस के चेहरे से नेक बन्दों की निशानी मिटा दी जाएगी ﴿3﴾ **अल्लाह** पाक उसे किसी अ़मल पर सवाब न देगा ﴿4﴾ उस की कोई दुआ़ आस्मान तक न पहुंचेगी और ﴿5﴾ नेक बन्दों की दुआ़ओं में उस का कोई ह़िस्सा न होगा।

मौत के वक़्त दी जाने वाली तीन सज़ाएं

﴿1﴾ वोह ज़लील हो कर मरेगा ﴿2﴾ भूका मरेगा और ﴿3﴾ प्यासा मरेगा अगर्चे उसे दुन्या भर के समुन्दर पिला दिये जाएं फिर भी उस की प्यास न बुझेगी।

क़ब्र में दी जाने वाली तीन सज़ाएं

﴿1﴾ उस की क़ब्र को इतना तंग कर दिया जाएगा कि उस की पस्लियां एक दूसरे में दाख़िल हो जाएंगी ﴿2﴾ उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी

फिर वोह दिन रात अंगारों पर लोटपोट होता रहेगा और ﴾3﴿ क़ब्र में उस पर एक अज़्दहा (या'नी बहुत बड़ा सांप) मुसल्लत़ कर दिया जाएगा उस का नाम अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़ (या'नी गन्जा सांप) है, उस की आंखें आग की होंगी, जब कि नाख़ुन लोहे के होंगे, हर नाख़ुन की लम्बाई एक दिन की मसाफ़त (या'नी फ़ासिले) तक होगी, वोह मय्यित से कलाम (या'नी बात) करते हुए कहेगा : मैं अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़ (या'नी गन्जा सांप) हूं। उस की आवाज़ कड़क दार बिजली की सी होगी, वोह कहेगा : मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि नमाज़े फ़ज्र ज़ाएअ़ करने पर तुलूए़ आफ़्ताब (या'नी सूरज निकलने) तक मारता रहूं और नमाज़े ज़ोहर ज़ाएअ़ करने पर अ़स्र तक मारता रहूं और नमाज़े अ़स्र ज़ाएअ़ करने पर मग़रिब तक मारता रहूं और नमाज़े मग़रिब ज़ाएअ़ करने पर इ़शा तक मारता रहूं और नमाज़े इ़शा ज़ाएअ़ करने पर फ़ज्र तक मारता रहूं। जब भी वोह उसे (या'नी मुर्दे को) मारेगा तो वोह 70 हाथ तक ज़मीन में धंस जाएगा और वोह (नमाज़ तर्क करने वाला) क़ियामत तक इस अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।

क़ियामत में मिलने वाली 3 सज़ाएं

﴾1﴿ वोह हिसाब की सख़्ती ﴾2﴿ रब्बे क़ह्हार की नाराज़ी और ﴾3﴿ जहन्नम में दाख़िला हैं।[1] (کتاب الکبائر للامام الحافظ الذہبی، ص24)

वज़ाहत : बयान कर्दा ह़दीसे पाक में 15 सज़ाओं का तज़्किरा है मगर तफ़्सील 14 सज़ाओं की बयान हुई है, शायद रावी पन्दरहवीं सज़ा भूल गए अलबत्ता फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की नक़्ल कर्दा रिवायत

1 ... मुतअ़द्दद मुह़द्दिसीन ने इस रिवायत की अस्नाद पर जर्ह़ फ़रमाई है, ताहम कई उ़लमा ने वा'ज़ो नसीह़त की किताबों में इसे शामिल भी किया है। लिहाज़ा बे नमाज़ियों को नमाज़ों के क़रीब लाने के लिये इस रिवायत को शामिल किया गया है।

में मुकम्मल 15 सज़ाओं का तज़्किरा है जिन में येह शामिल कर लें तो 15 का अ़दद पूरा हो जाता है : ''दुन्या में उस से मख़्लूक़ नफ़्रत करेगी ।''

(قرۃ العیون مع الروض الفائق، ص383)

नमाज़ों में सुस्ती करने वाले सोचें ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि उन की उ़म्र से बरकत उठा ली जाए ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि उन की दुआ़एं क़बूल न हों ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि नेक लोगों की दुआ़एं उन के ह़क़ में क़बूल न हों ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि नमाज़ों में सुस्ती करने के सबब वोह ज़िल्लत की मौत मारे जाएं ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि मरते वक़्त उन्हें ऐसी शिद्दत की प्यास लगी हो कि समुन्दरों का पानी पिलाने के बा वुजूद उन की प्यास न बुझे ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि क़ब्र इस त़रह़ दबाए कि उन की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में दाख़िल हो जाएं ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि उन की क़ब्र में आग भड़का दी जाए और वोह आग में उलट पुलट होते रहें ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि क़ब्र में बहुत बड़ा सांप उन पर मुसल्लत कर दिया जाए जो उन्हें हर वक़्त मारता रहे और एक बार मारे तो वोह 70 गज़ ज़मीन में धंस जाएं और फिर वोह अपने नाख़ुन ज़मीन में दाख़िल कर के अपना पन्जा डाल कर उन्हें निकाले और फिर मारे ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि कल बरोज़े क़ियामत आग का बादल उन के सामने आए ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि **अल्लाह** पाक चश्मे ग़ज़ब से उन की त़रफ़ देखे जिस के सबब उन के चेहरे की खाल और गोश्त झड़ जाए ! क्या उन्हें मन्ज़ूर है कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक उन से सख़्त नाराज़ हो जाए और सख़्ती से ह़िसाब ले और फिर जहन्नम का हुक्म सुना दे ! यक़ीनन येह उन्हें मन्ज़ूर नहीं होगा तो फिर ऐ बे नमाज़ियो ! हुक्मे क़ुरआनी ﴿اَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ﴾ (پ1، البقرۃ:43) **तरजमए**

कन्ज़ुल इरफ़ान : "नमाज़ क़ाइम रखो।" पर अ़मल करते हुए नमाज़ क़ाइम करने वाले बन जाओ। देखो ! नमाज़ का हुक्म **अल्लाह** पाक ने भी दिया है, प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी दिया है और **अल्लाह** पाक के उन औलिया ने भी दिया है जिन के मज़ाराते त़य्यिबात की हम ज़ियारत के लिये जाते हैं। देखो ! अगर अभी नमाज़ें न पढ़ीं तो मरने के बा'द पछताना पड़ेगा, हर शख़्स तमन्ना करेगा कि ऐ काश ! मुझे दोगाना पढ़ने की इजाज़त मिल जाए और मैं अपनी क़ब्र में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं लेकिन फिर मौक़अ़ हाथ नहीं आएगा तो अभी से अपना येह ज़ेह्न बना लीजिये कि ऐ **अल्लाह** पाक ! तू ने हमें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया तो हम आज से नमाज़ों की पाबन्दी की निय्यत करते हैं, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने हमें नमाज़ पढ़ने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया तो हम ने आज येह त़ै कर लिया कि अब हम नमाज़ें पढ़ेंगे, ऐ **अल्लाह** पाक के औलिया ! आप ने हमें नमाज़ पढ़ने की ताकीद की तो हम ने आज से पक्का अ़ह्द कर लिया है कि आज के बा'द हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी।

सुकून अल्लाह पाक के ज़िक्र में है !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर इन्सान की येह ख़्वाहिश होती है कि उसे बहुत सारी दौलत मिल जाए लेकिन क़िस्मत कि वोह मुफ़्लिस हो जाता है, हर इन्सान की येह ख़्वाहिश होती है कि वोह कभी बीमार न हो लेकिन तक़्दीर की बात है कि वोह बीमार भी पड़ जाता है, हर इन्सान की येह तमन्ना होती है कि उस पर कभी कोई मुसीबत नाज़िल न हो लेकिन आए दिन उसे मुश्किलात का सामना रहता है और वोह मसाइबो आलाम से दोचार होता ही रहता है, हर शख़्स येह चाहता है कि मुझे सुकून मिले

लेकिन वोह बे इत्मीनानी का शिकार हो कर रह जाता है, हर शख़्स येह चाहता है कि वोह कभी न मरे लेकिन बहर ह़ाल मौत उसे आ लेती है, वोह चाहता है कि मेरी जवानी बर क़रार रहे लेकिन बूढ़ा हो जाता है, वोह चाहता है मेरे हाथ में हुकूमत आ जाए लेकिन महकूम बन कर रहता है तो यूं इन्सान ज़बर दस्ती येह चाहता है कि अपनी मरज़ी चलाए लेकिन नहीं चला पाता क्यूं कि इस की लगाम किसी और के दस्ते क़ुदरत में है और वोह जब चाहता है इस की लगाम खींच लेता है, बन्दा अपने त़ौर पर बहुत सरकशी करता है लेकिन फिर भी आख़िर कार उस के ज़ुल्म का दौर ख़त्म हो जाता है। क़ुदरत जब इन्तिक़ाम लेती है तो बन्दे की कुछ नहीं चलती और वोह बेबस हो जाता है। देखिये ! फ़िरऔ़न बड़ा सरकश और जाबिर बादशाह गुज़रा है, उस ने बड़ा ज़ोर लगाया कि किसी भी त़रह़ वोह ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام पर ग़लबा पा ले लेकिन न पा सका। फ़िरऔ़न कई सो साल तक ज़िन्दा रहा और उ़म्र भर तन्दुरुस्त भी रहा लेकिन क्यूं कि लगाम किसी और के दस्ते क़ुदरत में है, जब उस ने लगाम खींची तो इतना बड़ा फ़रमां रवा और इतना बड़ा जाबिर बादशाह दरियाए नील में ग़र्क़ हो गया। नमरूद को देख लीजिये कि **अल्लाह** पाक ने उसे बड़ी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं मगर वोह ने'मतों के मिलने पर शुक्र अदा करने के बजाए फूल गया और अपने रब को भूल गया यहां तक कि ख़ुदा होने का दा'वा कर बैठा, ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام पर ग़ालिब आने के लिये उस ने क्या कुछ नहीं किया लेकिन इतना बड़ा बादशाह होने के बा वुजूद एक लंगड़े मच्छर के ज़रीए़ हलाक हुवा। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : जिस मच्छर ने नमरूद को हलाक किया वोह लंगड़ा था और उस ने नाक के ज़रीए़

दिमाग़ में पहुंच कर नमरूद का काम तमाम कर दिया और यूं नमरूद ज़लील हो कर मारा गया। (तफ़्सीरे नईमी, 3/61, 62 मुलख़्ख़सन) पता चला इस दुन्या में किसी की मरज़ी नहीं चलती और लगाम किसी और के दस्ते क़ुदरत में है, वोह जब चाहता है लगाम खींच लेता है तो फिर क्यूं नहीं उसी की त़रफ़ रुजूअ़ कर लेते जिस के दस्ते क़ुदरत में लगाम है। जब सब कुछ उसी के पास है, सब कुछ वोही करता है, वोही सब कुछ करने वाला है, सभी को उसी ने पैदा किया, वोही ज़िन्दा रखेगा और वोही मारेगा तो बन्दा उस की त़रफ़ क्यूं रुजूअ़ नहीं कर लेता ? आज कल सुकून का मुतलाशी चाहता है कि मुझे सुकून मिल जाए और इस मक़्सद के लिये वोह इन्टरनेट खोल लेता है, गाने बाजे सुनता है, ताश खेलता है, शत़रन्ज बिछा लेता है, फ़िल्में ड्रामे देखता है, शराब पीने लग जाता है और पता नहीं क्या क्या करता है लेकिन उसे सुकून नहीं मिल पाता क्यूं कि सुकून इन चीज़ों में नहीं और न ही सुकून मेरे और आप के इख़्तियार में है।

याद रखिये ! सुकून जिस के दस्ते क़ुदरत (क़ब्ज़े) में है उस ने सुकून का ज़रीआ़ ही कुछ और बताया है। बहुत से लोगों ने सुकून ह़ासिल करने के लिये टीवी खोल लिये, गाने बाजे सुनने और फ़िल्में ड्रामे देखने लगे कि शायद सुकून मिल जाए मगर उन्हें सुकून नहीं मिल पाया क्यूं कि सुकून इन चीज़ों में नहीं, **अल्लाह** पाक के ज़िक्र में है चुनान्चे पारह 13 **सूरए रा'द** की आयत नम्बर 28 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

﴿ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ؕ۲۸ ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।" बेशक मह़फ़िले ज़िक्र में **अल्लाह, अल्लाह** करना भी ज़िक्र है और इस से भी सुकून मिलता है लेकिन सिर्फ़ येही ज़िक्र

नहीं बल्कि ज़िक्र की और भी अक़्साम हैं : मसलन "नमाज़, क़ुरआने पाक की तिलावत, ना'त शरीफ़, तस्बीह़, नेक लोगों के ह़ालात बयान करना वग़ैरा।" (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 114, 1/193 मुलख़्ख़सन) अगर कोई सुकून चाहता है तो उसे चाहिये **अल्लाह** पाक की बारगाह में रुजूअ़ करे और नमाज़ों की पाबन्दी करे, اِنْ شَآءَاللّٰه उसे सुकून मिल जाएगा। याद रखिये ! अगर आप **अल्लाह** पाक की बारगाह को छोड़ कर इधर उधर भागोगे तो बात ख़राब हो जाएगी और अगर उस के दरवाज़े पर पड़े रहोगे तो वोह आप को नवाज़ देगा इस लिये कि वोह बड़ा रह़ीम व करीम है। जो **अल्लाह** पाक का हो जाता है काएनात उस के ताबेअ़ कर दी जाती है और जो **अल्लाह** पाक के अह़कामात पर अ़मल नहीं करता और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन छोड़ता है तो वोह उस से रूठ जाता है और जब वोह रूठ जाता है तो लगाम खींच लेता है और जब वोह लगाम खींचता है तो दुन्या की कोई त़ाक़त बचा नहीं सकती।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस बात में कोई शक नहीं कि ईमान लाना बहुत बड़ी सआ़दत है लेकिन नेक आ'माल करना भी ज़रूरी है। अगर हम ने नेक आ'माल न किये और **अल्लाह** पाक ने अपने करम से हमें बख़्श दिया तो येह हमारी त़रफ़ से बे वफ़ाई होगी कि हम ने **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये कुछ नहीं किया ह़ालां कि "ज़माने भर का येह क़ाइदा है कि जिस का खाना उसी का गाना" देखिये ! हम **अल्लाह** पाक की ने'मतें खाते हैं और उस के करम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे चले जा रहे हैं लेकिन हम नमाज़ न पढ़ कर उस की ना फ़रमानी करते हैं लिहाज़ा अगर वोह नाराज़ हो गया और उस ने हमारी डोर खींच ली तो फिर हमारा ह़श्र

बड़ा बुरा होगा। याद रहे ! येह बात तो तै है कि कुछ न कुछ मुसल्मान ज़रूर ऐसे होंगे जो مَعَاذَاللّٰه ! जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे, हम जहन्नम का नाम सुनते रहते हैं मगर हम में से बहुत सों को येह मा'लूम नहीं होगा कि जहन्नम क्या है ? आइये कुछ जहन्नम का तज़्किरा पढ़िये :

जहन्नम की शिद्दत और तमाज़त का आ़लम

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा है, अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं । (معجم اوسط، 2/78، حدیث:2583 ملخصًا) करोड़ों अरबों मील जहन्नम हम से दूर है इस के बा वुजूद इस की तपिश इतनी है कि अगर सूई के नाके के बराबर इस को खोल दिया जाए तो सारी मख़्लूक़ हलाक हो जाए, जो ख़ुद उस जहन्नम में जाएगा उस का ह़ाल क्या होगा ? ह़ालां कि एक क़ौल के मुताबिक़ "जहन्नम सातवीं ज़मीन के नीचे है।" (شرح عقائد نسفیہ، ص249)

जहन्नम इन्तिहाई सियाह है

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम की आग एक हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि अब वोह इन्तिहाई सियाह है। (ترمذی، 4/266، حدیث:2600)

अंधेरा होना बज़ाते ख़ुद अ़ज़ाब है, अगर बिजली चली जाए तो अंधेरा होने के सबब लोग बेचैन व परेशान हो जाते हैं तो यूं अंधेरा ख़ुद एक दहशत ज़दा करने वाला है और फिर इस के साथ साथ इतनी ख़तरनाक सियाह आग भी होगी ! ख़राबी है उस बद नसीब शख़्स के लिये जो जहन्नम में जाएगा ।

अल्लाह पाक की रह़मत से मायूस न हों

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक की रह़मत से मायूस मत हों, बस आप **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात वग़ैरा को ख़ुश उस्लूबी के साथ अन्जाम देते रहें, उस की मन्अ़ की हुई चीज़ों से बाज़ रहें और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन मज़बूती से थामे रखें, **अल्लाह** पाक आप से राज़ी हो जाएगा और दोनों जहां में आप का बेड़ा पार होगा । देखिये ! हम अपने बच्चों से मह़ब्बत करते हैं और मह़ब्बत की वज्ह से उन की हर फ़रमाइश पूरी करते हैं मसलन अगर हमारा बच्चा बोले : अब्बू ! मुझे मोटर कार चाहिये तो हम उसे कहते हैं कि मेरे बेटे ! एक नहीं दो दिला दूंगा और फिर एक के बजाए दो चाबी वाली मोटर कारें उस के लिये मुहय्या कर देते हैं, इसी त़रह़ अगर हमारा बच्चा बोले : अब्बू ! मुझे साइकिल चाहिये तो हम मह़ब्बत में उस की येह ख़्वाहिश भी पूरी कर देते हैं ।

अब हम अपना जाएज़ा लें कि हम सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का दम भरते और ख़ुद को आ़शिक़ाने रसूल कहलाते हैं मगर नमाज़ें क़ज़ा कर देते हैं ह़ालां कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ या'नी नमाज़ में मेरी आंखों की ठन्डक रखी गई है। (نسائی، ص644، حدیث:3945) देखिये ! जिस से महब्बत होती है उस की आंखों की ठन्डक का लिहाज़ किया जाता है लेकिन हम महब्बत करने के बा वुजूद प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक का लिहाज़ नहीं करते ! सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच्ची महब्बत थी इस लिये वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाओं को अदा करने की भरपूर कोशिश करते थे, इस ज़िम्न में चन्द वाक़िआत पढ़िये :

वुज़ू करते हुए मुस्कुराने लगे

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल बल्कि इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का अ़मली नमूना थे, एक बार हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه वुज़ू करते हुए मुस्कुराने लगे ! लोगों ने वज्ह पूछी तो फ़रमाने लगे : मैं ने एक मरतबा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी जगह पर वुज़ू फ़रमाने के बा'द मुस्कुराते हुए देखा था।

(مسند امام احمد، 1/130، حدیث:415 ملخصاً)

वुज़ू कर के ख़न्दां हुए शाहे उ़स्मां कहा क्यूं तबस्सुम भला कर रहा हूं ?
जवाबे सुवाले मुख़ात़ब दिया फिर किसी की अदा को अदा कर रहा हूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

किसी की अदा को अदा कर रहा हूं

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا मक्कए मुकर्रमा जाते हुए एक झड़ बेरिया की शाख़ों में अपना इ़मामा शरीफ़ उलझा कर कुछ आगे बढ़ जाते फिर वापस होते और इ़मामा शरीफ़ छुड़ा कर आगे बढ़ते। लोगों ने पूछा : येह क्या ? इर्शाद फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

इमामा शरीफ़ इस बेर में उलझ गया था और हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी दूर आगे बढ़ गए थे और वापस हो कर अपना इमामा शरीफ़ छुड़ाया था।

(نور الایمان بزیارۃ آثار حبیب الرّحمٰن، ص 15 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنۡہُم को प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किस क़दर महब्बत थी कि वोह हत्तल इम्कान आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाओं को अपनाने की कोशिश किया करते थे।

सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنۡہُم को सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हक़ीक़ी महब्बत थी लेकिन आज हमारी महब्बत सिर्फ़ बातों तक महदूद है। अभी आप ने पढ़ा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا इमामा शरीफ़ सजाए हुए थे जब कि हम ने इमामा शरीफ़ की सुन्नत को छोड़ दिया है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी ने इस गए गुज़रे दौर में इमामा शरीफ़ की सुन्नत को ज़िन्दा कर दिया है, येही वज्ह है कि आज हमें हज़ारों नहीं बल्कि लाखों सरों पर इमामे के ताज सजे नज़र आ रहे हैं वरना पहले बहुत ही कम लोग इमामा शरीफ़ सजाते थे। याद रखिये ! नंगे सर रहने की सूरत जभी मुयस्सर आएगी जब आप इमामा शरीफ़ पहनना छोड़ देंगे क्यूं कि इमामा शरीफ़ जेब में रखना मुश्किल है जब कि टोपी जेब में रख लेना आसान है। बद क़िस्मती से इमामा शरीफ़ की सुन्नत भी मफ़्क़ूद हो गई हालां कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सरे अक़्दस पर इमामा शरीफ़ टोपी के ऊपर सजाए रखा और इस की तरग़ीब भी दिलाई चुनान्चे एक बार आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इमामे शरीफ़ की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : फ़िरिश्तों के ताज ऐसे

ही होते हैं । (کنزالعمال،8/205،حدیث:41902ملخصاً) नीज़ एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : इमामे बांधो कि इस से तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा ।

(مستدرک،5/272،حدیث:7488)

याद रखिये ! हमें हक़ीक़ी मा'नों में औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की ख़ुशनूदी (रिज़ा) जभी हासिल होगी कि जब हम उन की सीरत पर अमल करेंगे, औलियाए किराम ने अपनी पूरी ज़िन्दगी सुन्नतों को आम करने के लिये वक़्फ़ कर रखी थी और वोह हज़रात पूरी ज़िन्दगी सुन्नतों का दर्स देते रहे जब कि आज हम ने अमली तौर पर येह तै कर लिया है कि सुन्नतें अपनाने पर सख़्ती से पाबन्दी है ।

क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज लोग कहते हैं : पता नहीं क्या वज्ह है कि हमारे घरों से बीमारी नहीं जाती, हमारे घरों से बे रोज़गारी नहीं जाती, हमारे यहां औलाद नहीं होती, हमारे यहां येह परेशानी है और वोह परेशानी है ! और येह कहते सुनाई देते हैं कि "पता नहीं क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है जिस की हम को सज़ा मिल रही है" जब कि हालत येह है कि चेहरे से दाढ़ी साफ़ कर के उसे दुश्मनाने मुस्तफ़ा जैसा बनाया होता है और नमाज़ें भी बिल्कुल नहीं पढ़ते । अगर आप चाहते हैं कि आप के घर से बीमारियां, बे रोज़गारियां, बे औलादियां और परेशानियां दूर हों तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अमल कीजिये और पाबन्दी से नमाज़ें पढ़िये । اِنْ شَآءَ الله आप को ज़ेहनी और दिली सुकून हासिल होगा और आप का घर अम्नो ख़ुशहाली का गहवारा बन जाएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	क़ब्र में दी जाने वाली तीन सज़ाएं	6
मैं ने ऐसा क्यूं किया ?	1	क़ियामत में मिलने वाली 3 सज़ाएं	7
बे नमाज़ियों के लिये जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी	3	सुकून **अल्लाह** पाक के ज़िक्र में है !	9
होलनाक कूंवां	3	जहन्नम की शिद्दत और तमाज़त का आ़लम	13
दुन्यवी कूंवां	3		
बिग़ैर गोश्त के चेहरे	4	जहन्नम इन्तिहाई सियाह है	13
बे नमाज़ी के लिये न नूर होगा और न दलील और नजात	5	**अल्लाह** पाक की रह़मत से मायूस न हों	14
बे नमाज़ी की 15 सज़ाएं	6	वुज़ू करते हुए मुस्कुराने लगे	15
दुन्या में मिलने वाली पांच सज़ाएं	6	किसी की अदा को अदा कर रहा हूं	15
मौत के वक़्त दी जाने वाली तीन सज़ाएं	6	क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है !	17

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

DAWATEISLAMI INDIA

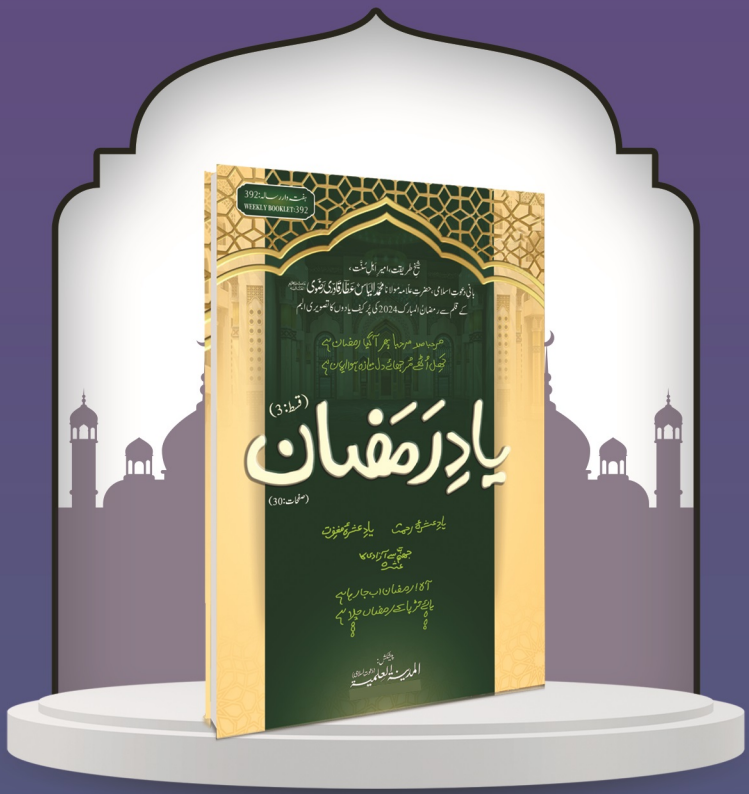

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025